“Unani Medicine – Towards Achieving the Sustainable Development Goal - 3 (SDG-3) of Good Health and Well Being”

11 February, 2020, विज्ञान भवन

**माननीय रक्षामंत्री का संबोधन**

Sh. Shripad Yesso Naik, Hon’ble Minister of AYUSH (IC) and MoS, Ministry of Defence

Dr. Jitendra Singh, Hon’ble Minister of State (Independent Charge), Ministry of Development of North Eastern Region, Minister of State, Prime Minister’s Office, Ministry of Personnel, Public Grievances and Pensions, Department of Atomic Energy & Department of Space, Government of India।

Shri Vaidya Rajesh Kotecha, Secretary, Ministry of AYUSH

Shri Pramod Kumar Pathak, Addl Secretary, Ministry of AYUSH

Prof. Asim Ali Khan, Director General, CCRUM, Ministry of AYUSH

Dr. Mohammad Tahir, Advisor Unani, Ministry of AYUSH

International & National Delegates,

Distinguished Guests,

Friends from Media

बहनों और भाइयों,

• आज ‘यूनानी दिवस’ के अवसर पर, आयुष मंत्रालय द्वारा ‘यूनानी चिकित्सा पद्धति’ विषय पर आयोजित दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सेमिनार में, आप सभी scholars, researchers और academic दुनिया से जुड़े लोगों के बीच आकर मैं बड़ी प्रसन्नता का अनुभव कर रहा हूं। साथ ही, बाहर देश से आए participants और scholars का मैं ‘योग और आरोग्य’ की भूमि भारत पर हार्दिक स्वागत करता हूं।

• मैं आप सभी को यूनानी चिकित्सा पद्धति के महान physician, educationist और freedom fighters श्री हकीम अजमल खान साहब के जन्मदिवस पर मनाए जाने वाले ‘यूनानी दिवस’ की भी हार्दिक बधाई देता हूं। हकीम अजमल खान, ना सिर्फ एक जाने-माने यूनानी चिकित्सा विशेषज्ञ थे, बल्कि भारत के स्वतंत्रता संग्राम में भी उनका महत्वपूर्ण योगदान था। एक तरफ जहां उनके कर्म में मानव स्वास्थ्य का चिंतन था, वहीं दूसरी तरफ उनका देश, उनका भारत, उनके मन में बसता था। मैं समझता हूं आज के दिवस को ‘यूनानी दिवस’ घोषित करना हकीम अजमल खान साहब के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि है।

• लगभग 2500 साल पहले ancient Greece में जन्मी ‘यूनानी चिकित्सा’ का Arab और persia से होते हुए भारत आना, और इसका यहाँ रच-बस जाना इस पद्धति की acceptability और इसकी लोकप्रियता का प्रतीक है | आयुर्वेद व यूनानी चिकित्सा जहां भिन्न-भिन्न विधाएं हैं, वहीं यह दोनों, ‘Prevention is better than Cure’ के सिद्धांत पर आधारित हैं। इस प्रकार, इनके मूल में शरीर के साथ-साथ “मनसा-वाचा-कर्मणा” की शुद्धता निहित है। इस वजह से भी यूनानी चिकित्सा को भारत में एक मजबूत आधार प्राप्त हुआ।

• हमारे देश में ‘स्वास्थ्य’ और ‘आरोग्य’ पर प्राचीन काल से ही बल दिया गया है। हमारे ऋषियों द्वारा भी कहा गया है कि, ‘आरोग्यम् धनसंपदा’ यानी आरोग्य ही सबसे बड़ी संपत्ति है। आरोग्य को इतना महत्व दिया गया है कि हमारी ancient wisdom में आरोग्य को मनुष्य का परम भाग्य माना गया है।

• आज भी आप अपने घर परिवार में कहीं न कहीं सुन ही लेते होंगे कि, ‘पहला सुख निरोगी काया’ यानी आपका स्वास्थ्य ही पहला सुख है, भारत का vision हमेशा से global एवं all-inclusive रहा है हमारी प्रार्थना ‘सर्वे भवंतु सुखिनः सर्वे संतु निरामया’ में भी सभी लोगों के सुखमय जीवन की जो कामना की गई है, उसमें भी ‘निरामय’ अथवा ‘निरोग’ को पहली आवश्यकता बताया गया है।। इस तरह आप लोगों ने इस सेमिनार में चर्चा का जो विषय रखा है, मैं समझता हूं कि वह अपने व्यापक उद्देश्यों में संपूर्ण विश्व के सुखमय जीवन की कामना का संदेश साथ लिए हुए है। आने वाले समय में यूनानी चिकित्सा पद्धति की इसमें अहम भूमिका होगी, ऐसा मेरा विश्वास है।

• इस conference की theme, यूनानी चिकित्सा के माध्यम से ‘good health और well-being’ एक बहुत प्रासंगिक, और आज के दौर के लिए आवश्यक विषय है। यह संदेश और उद्देश्य आज ‘United Nations’ द्वारा दिया गया ‘Sustainable Development Goal-3’ यानी ‘Good Health and Well being for all’ के रूप में international community के सामने है। यह goal रोगों को खत्म करने, उपचार और स्वास्थ्य सेवाओं को बढ़ावा देने, emerging health issues को address करने के साथ ही इन क्षेत्रों में innovation और research को बढ़ावा देने के लिए भी committed है। मैं समझता हूँ, कि United Nations द्वारा मानव जीवन की बेहतरी के लिए निर्धारित किए गए जितने भी 17 Goals हैं, वह चाहे Education हो या Economic Growth, Infrastructure हो या Peace & Justice, इन सबमें Good health & well being एक Central Goal है। इसमें कोई दो राय नहीं कि, एक बेहतर और स्वस्थ जीवन के साथ ही एक बेहतर दुनिया की ओर कदम बढ़ा पाना संभव है।

• साथियों, एक healthy world के लिए आवश्यक है कि health के प्रति एक holistic approach रखी जाए। हमारा शारीरिक स्वास्थ्य, मानसिक स्वास्थ्य, पर्यावरण, स्वच्छता, यहां तक कि society और अर्थव्यवस्था, सब आपस में एक दूसरे से किसी न किसी प्रकार से जुड़े हुए हैं। हम इन्हें अलग-अलग दृष्टि से नहीं देख सकते हैं। ‘WHO’ स्वयं स्वास्थ्य को ‘Complete physical, Mental और social well being’ के रूप में define करता है, केवल बीमारियों से बचाव ही स्वास्थ्य नहीं है। इसलिए आज की आवश्यकता है, कि हम स्वास्थ्य को mental, emotional और physical component के साथ जोड़कर देखें।

• हमारा देश चिकित्सा और उपचार पद्धतियों के संदर्भ में एक समृद्ध देश रहा है। आयुष की प्रत्येक प्रणाली आयुर्वेद, योग, सिद्ध, सोवा-रिग्पा और होम्योपैथी, अपने integrated रूप में उसी holistic approach के अनुसार काम करती है। हम देख सकते हैं कि मानव स्वास्थ्य के लिए प्रचलित इन पद्धतियों में अनेक elements common हैं। उदाहरण के लिए भारतीय और यूनानी परंपरा को ही देखें। आयुर्वेदिक परंपरा में मानव शरीर पृथ्वी, अग्नि, जल, वायु और आकाश आदि पंचतत्वों से निर्मित माने जाते हैं। यूनानी में भी आकाश को छोड़कर बाकी सभी तत्व शरीर की निर्मिति के जिम्मेदार तत्व माने जाते हैं। इसी तरह भारतीय परंपरा में प्रचालित वात, पित्त और कफ भी यूनानी के दम (Blood), बलगम (Phelgm), सफ़रा (Yellow Bile) और सौदा (Black Bile) की पद्धति के बहुत करीब है। यहाँ बैठे यूनानी पद्धति के scholars से मैं यह कहना चाहूँगा कि वे लोग इस विषय पर भी विचार करें, कि यूनानी पद्धति और भारतीय पद्धति में इतनी similarity क्यों है? इस तरह एक चिकित्सकीय Research के साथ सभ्यतागत शोध भी इस field में अपेक्षित है।

• मित्रों, पारंपरिक चिकित्सा पद्धति में, बदलते समय के साथ नई पद्धतियों और health management की नई तकनीकों को साथ जोड़ने की आवश्यकता है। मुझे यह जानकर खुशी है कि आयुष मंत्रालय ने हमारी Traditional system of medicine के विकास के लिए भी कई बेहतरीन कदम उठाए हैं। ‘Ayush system’ की अलग-अलग पद्धतियों के साथ मिलकर, यूनानी चिकित्सा पद्धति, Non communicable diseases, का समाधान खोजने में एक महत्वपूर्ण role play कर सकती है। आज के lifestyle के कारण, health care delivery system में यूनानी चिकित्सा का एक अहम पद्धति के रूप में उभरना इस बात का प्रमाण है। यूनानी चिकित्सा पद्धति, अपने आप में unique है। स्वस्थ जीवन के लिए easy availability, effectiveness एवं affordability यूनानी चिकित्सा पद्धति की महत्वपूर्ण विशेषताएं हैं। इस प्रणाली में उपयोग की जाने वाली दवाएं ज्यादातर पौधों और खनिजों से प्राप्त की जाती हैं, इसलिए वे comparatively natural एवं सुरक्षित हैं। ये दवाएं प्रकृति की तरफ लौटने अथवा chemical व artificial दवाओं से natural products की तरफ बढ़ने की प्रेरणा देती हैं। यह प्रणाली विभिन्न आम और पुरानी बीमारियों के लिए time-tested remedies प्रस्तुत करती है। Non communicable diseases सहित विभिन्न स्वास्थ्य चुनौतियों के समाधान खोजने में अन्य Ayush Systems के साथ यूनानी चिकित्सा एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है।

• आज जिस गति से antibiotics का usage बढ़ा है, और कई बार बिना जरूरत के भी antibiotics दे दी जाती हैं, उससे antibiotics resistance के instances भी बहुत बढ़ते जा रहे हैं। ऐसी स्थिति में Ayush system of medicine और खासकर unani system काफी उपयोगी साबित हो सकता है। एक खास बात जो यूनानी system में मुझे पता चली कि शरीर की immunity को बढ़ाने वाली दवाएं भी होती हैं। इनका उचित प्रयोग करके तरह तरह के रोगों से बचना आज के समय की जरूरत है. यूनानी पद्धति हमें बिना किसी विशेष प्रयास के, केवल अपने खान-पान में balancing करके अपने शरीर को स्वस्थ रखने का उपाय बताता है. साथ ही यूनानी पद्धति symptomatic treatment की जगह किसी भी रोगी के complete treatment की तरफ ध्यान देती है |

• Main Stream health care में यूनानी medicines की acceptability इसकी जनता में लोकप्रियता पर ही आधारित है। इसका एक बेहतरीन उदाहरण ‘Sauna’ है। आज ‘Sauna’ के द्वारा शरीर के toxics को बाहर निकाल देना काफी लोकप्रिय होता जा रहा है, जो यूनानी चिकित्सा का एक प्रमुख अंग है।

• आज हमें यह भी देखने की जरूरत है कि किस तरीके से हम unani system को और बेहतर एवं popular बनाएं। मेरे ध्यान में कुछ आसान कदम आते हैं, जैसे दवाइयों का standardisation कर देने से patients में Unani दवाइयों के प्रति और अधिक भरोसा बढ़ेगा। इस system को बाकी Ayush system के साथ देश-विदेश, दोनों जगह popularize किया जाए ताकि लोगों के बीच से demand आए। Doctors की training एवं course को modern technology के साथ integrate करके और relevant बनाया जाए। साथ ही सबसे ज्यादा ज़रूरत है, कि इस system of medicine में अनुसंधान कार्य continue किया जाए या कहें कि बढ़ाया जाए। मेरा मानना है, कि लगातार research और improvement का कार्य चलते रहना चाहिए, क्योंकि बदलते समय के साथ ही अब नए-नए रोगों का आगमन हो रहा है, जिनका सामना करने के लिए हम सब को तैयार रहना होगा।

• मित्रों, मैं युवा students और researchers के प्रोत्साहन के लिए भी दो शब्द कहना चाहूंगा, जो इस सम्मेलन में भाग लेने आज यहां आए हैं। जब आप किसी conference में भाग लेने आते हैं, तो यह आपकी जानकारी को बढ़ाने के साथ-साथ आपको एक human network बनाने की opportunity भी देता है। जो आपके work caliber को असीमित ऊंचाइयों तक ले जाने में सक्षम होता है। मैं विभिन्न categories में पुरस्कृत recipients की लगन व उनके बेजोड़ योगदान के लिए भी उन्हें बहुत-बहुत बधाई देना चाहूंगा।

• जब मैं हमारे देश के health care system को समग्रता में देखता हूं, तो मैं पाता हूं, कि श्री श्रीपद येसो नाईक जी के नेतृत्व में आयुष मंत्रालय ने National Health Programme की ओर महत्वपूर्ण कदम बढ़ाया है। आप देश की ‘रक्षा’ के साथ-साथ देश की ‘स्वास्थ्य रक्षा’ से भी बराबर जुड़े हैं, यह बड़ी बात है।

• अंत में मैं कहना चाहूँगा कि human well being की जितनी भी पारंपरिक पद्धतियाँ उपलब्ध हैं, उन सब की अपनी एक खास merit है। हमें उन merits को पहचानते हुए, सभी पद्धतियों को एक साथ लेकर चलने की जरूरत है, जिससे हम एक बेहतर मानव, बेहतर समुदाय, बेहतर राष्ट्र और एक बेहतर विश्व के निर्माण की ओर अग्रसर हो सकें।

• मैं इस conference के successful होने की कामना करते हुए अपना निवेदन समाप्त करता हूँ।

जय हिंद।